विषय सूची

बोल नं०		पृष्ठ
	मुख पृष्ठ	१
	आभार प्रदर्शन	२
	दो शब्द	३
	पुस्तक प्रकाशन समिति	४
	विषय सूची, पता	५
	अकाराद्यनुक्रमणिका	११
	मंगलाचरण	१
	३१ वां बोलः— २-१४	
६६१	सिद्ध भगवान् के इकतीस गुण	२
६६२	साधु की ३१ उपमाएं	४
६६३	सूत्रकृताङ्ग (सूयगडांग) सूत्र चौथे अ० प्रथम उ० की ३१ गाथाएं	६
	३२ वां बोलः—१५-६१	
६६४	ब्रह्मचर्य (शील की) बत्तीस उपमाएं	१५
६६५	बत्तीस योग संग्रह	१६
६६६	बत्तीस सूत्र	२१
६६७	सूत्र के बत्तीस दोष	२३
६६८	बत्तीस अस्वाध्याय	२८
६६९	वंदना के बत्तीस दोष	३८
६७०	सामायिक के बत्तीस दोष	४३
६७१	बत्तीस विजय	४३
६७२	उत्तराध्ययन सूत्र के पाँचवें अकाम मरणीय अ० की बत्तीस गाथाएं	४६
६७३	उत्तराध्ययन सूत्र के ग्यारहवें बहुश्रुतपूजा अध्ययन की बत्तीस गाथाएं	५१
६७४	सूयगडाँग सूत्र द्वितीय अध्ययन के द्वितीय उ० की बत्तीस गाथाएं	५६
	३३ वां बोलः— ६१-६८	
६७५	तेतीस आशातनाएं	६१
६७६	अनन्तरागत सिद्धों के अल्पबहुत्व के तेतीस बोल	६६
	३४ वां बोलः— ६८-७१	
६७७	तीर्थङ्कर देव के चौतीस अतिशय	६८
६७८	जम्बूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति के ३४ क्षेत्र	७१
	३५ वां बोलः— ७१-८७	
६७९	पैंतीस सत्य वचनातिशय	७१

बोल नं०		पृष्ठ
६८०	गृहस्थ धर्म के पैंतीस गुण	७४
३६ वां बोलः–		**८७-१२२**
६८१	सूयगडांग सूत्र के नवें धर्माध्ययन की छत्तीस गाथाएं	८७
६८२	आचार्य के छत्तीस गुण	६४
६८३	**प्रश्नोत्तर ३६ः—**	**६८**
(१)	नमस्कार सूत्र में सिद्ध और साधु के दो ही पद न कह कर पाँच पद क्यों कहे ?	६८
(२)	नमस्कार सूत्र में सिद्ध से पहले अरिहन्त को क्यों नमस्कार किया गया ?	६८
(३)	नमस्कार उत्पन्न है या अनुत्पन्न ? यदि उत्पन्न है तो उसके उत्पादक निमित्त क्या हैं ?	१००
(४)	नमस्कार का स्वामी नमस्कारकर्त्ता है या पूज्य है ?	१०१
(५)	तीर्थङ्कर दीक्षा लेते समय किसे नमस्कार करते हैं ?	१०२
(६)	क्या परमावधिज्ञानी चरम शरीरी होते हैं ?	१०३
(७)	अनुत्तरविमान वासी देव शंका होने पर किसे पूछते हैं और कहाँ से ?	१०३
(८)	मनःपर्ययज्ञान का विषय क्या है ?	१०४
(९)	मनःपर्ययदर्शन नहीं है फिर मनःपर्ययज्ञानी अनन्तप्रदेशी स्कन्ध जानता और देखता है, यह कैसे कहा ?	१०५
(१०)	चक्षु की तरह श्रोत्र आदि इन्द्रियाँ भी दर्शन में कारण हैं फिर चक्षुदर्शन की तरह श्रोत्र आदि दर्शन क्यों नहीं कहे गये ?	१०६
(११)	सर्वविरतिरूप सामायिक वाले को पोरिसि आदि के प्रत्याखानों की क्या आवश्यकता है ?	१०७
(१२)	क्या साधु के सत्य वचन में विवेक होना चाहिये ?	१०७
(१३)	साधु के लिये ग्लान साधु की सेवा करना आवश्यक है या उसकी	

प्रश्न बोल नं०		पृष्ठ
	इच्छा पर निर्भर है ?	१०८
(१४)	अनुत्तर विमान में उत्पन्न जीव क्या नरक तिर्यञ्च के भव करता है ?	११२
(१५)	अभव्य जीव ऊपर कहाँ तक उत्पन्न होते हैं ?	११३
(१६)	विविध गुण विशिष्ट श्रावक अन्तसमय आलोचना प्रतिक्रमण कर संथारापूर्वक काल कर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?	११४
(१७)	विविध गुण सम्पन्न अनगार महात्मा इस भव की स्थिति पूरी कर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?	११५
(१८)	आठ कर्मों का क्षय करने वाले महात्मा यहां की स्थिति पूरी कर कहां उत्पन्न होते हैं ?	११७
(१९)	व्रतधारी तिर्यञ्च अन्त समय विधि पूर्वक काल कर कहां उत्पन्न होता है ?	११७
(२०)	औपशमिक और क्षायिक सम्यक्त्व में क्या अन्तर है ?	११७
(२१)	सामायिक और छेदोपस्थापनीय चारित्र अलग अलग क्यों कहे गये हैं ?	११८
(२२)	तीर्थङ्करों ने पांच महाव्रत और चार महाव्रत रूप धर्म अलग अलग क्यों कहा ?	११९
(२३)	मोहनीय कर्म वेदता हुआ जीव मोहनीय कर्म बांधता है या वेदनीय कर्म बांधता है ?	१२०
(२४)	जीव हल्का और भारी किस प्रकार होता है ?	१२०
(२५)	द्रव्य हिंसा में हिंसा का लक्षण नहीं घटता फिर वह हिंसा क्यों कही गई ?	१२१
(२६)	क्या सभी मनुष्य एक सी क्रियावाले होते हैं ?	१२१
(२७)	क्या पृथ्वी के जीव अठारह पाप का सेवन करते हैं ?	१२२
(२८)	द्रव्य और भाव मन का क्या स्वरूप है ? क्या द्रव्य और भाव मन एक दूसरे के बिना भी होते हैं ?	१२२
(२९)	द्रव्य क्षेत्र काल भाव इनमें कौन किससे सूक्ष्म है ?	१२४

प्रश्न बोल नं०	पृष्ठ
(३०) देवता कौनसी भाषा बोलते हैं ?	१२५
(३१) क्या ज्योतिष शास्त्र की तरह जैन शास्त्रों में भी पुष्य नक्षत्र की श्रेष्ठता का वर्णन है ?	१२६
(३२) तेरह काठिये के बोलों का वर्णन कहाँ है ?	१२६
(३३) धनुष के जीवों की तरह क्या पात्रादि के जीवों को भी जीवरक्षा कारणक पुण्य का बंध होता है ?	१२८
(३४) क्या 'माहण' का अर्थ श्रावक भी होता है ?	१२९
(३५) भगवती श० ८ उ० ६ में तथारूप के असंयती अविरति को प्रासुक या अप्रासुक आहार देने से एकान्त पाप होना किस अपेक्षा से बतलाया है ?	१३०
(३६) अपनी ओर से किसी को भय न देना ही क्या अभयदान का अर्थ है ?	१३१
३७ वां बोलः—१३२-१३८	
९८४ उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें द्रुमपत्रक अ० की सैंतीस गाथाएं	१३३
३८ वां बोलः—	**१३९**
९८५ सूयगडांग सूत्र के ग्यारहवें मार्गाध्ययन की अड़तीस गाथाएं	१३९
३९ वां बोलः—	**१४४**
९८६ समय क्षेत्र के उनचालीस कुल पर्वत	१४४
४० वां बोलः—	**१४५**
९८७ खरबादर पृथ्वीकाय के चालीस भेद	१४५
९८८ दायक दोष से दूषित चालीस दाता	१४६
४१ वां बोलः—	**१४६**
९८९ उदीरणा बिना उदय में आने वाली इकतालीस प्रकृतियाँ	१४६
४२ वां बोलः—	**१४९**
९९० आहारादि के बयालीस दोष	१४९
९९१ नामकर्म की बयालीस प्रकृतियाँ	१४९
९९२ आश्रव के बयालीस भेद	१४९
९९३ पुण्यप्रकृतियाँ बयालीस	१५०

बोल नं०		पृष्ठ
४३ वां बोल— १५१–२५२		
६६४	प्रवचन संग्रह तयालीस	१५१
१	धर्म	१५१
२	नमस्कार महात्म्य	१५३
३	निर्ग्रन्थ प्रवचन महिमा	१५५
४	आत्मा	१५६
५	सम्यग्दर्शन	१५८
६	सम्यग्ज्ञान	१६०
७	क्रिया रहित ज्ञान	१६२
८	व्यवहार निश्चय	१६३
९	मोक्षमार्ग	१६४
१०	अहिंसा–दया	१६७
११	सत्य	१७२
१२	अदत्तादान (चोरी) विरति	१७६
१३	ब्रह्मचर्य–शील	१७७
१४	अपरिग्रह परिग्रह का त्याग	१८१
१५	रात्रि भोजन त्याग	१८४
१६	भ्रमरवृत्ति	१८५
१७	मृगचर्या	१८६
१८	सच्चा त्यागी	१८८
१९	वमन किये हुए को ग्रहण न करना	१८९
२०	पूजा प्रशंसा का त्याग	१९०
२१	रति अरति	१९३
२२	यतन	१९५
२३	विनय	१९५

बोल नं०		पृष्ठ
२४	विजय	१९८
२५	दान	२००
२६	तप	२०२
२७	अनासक्ति	२०५
२८	आत्म–दमन	२०७
२९	रसना (जीभ)का संयम	२१२
३०	कठोरवचन	२१४
३१	कर्मों की सफलता	२१६
३२	कामभोगों की असारता	२१८
३३	अशरण	२२२
३४	जीवन की अस्थिरता	२२५
३५	वैराग्य	२२८
३६	प्रमाद	२३१
३७	राग द्वेष	२३३
३८	कषाय	२३६
३९	तृष्णा	२४२
४०	शल्य	२४४
४१	आलोचना	२४६
४२	आत्म-चिन्तन	२४८
४३	क्षमापना	२५०
४४ वां बोल—		२५२
६६५	स्थावर जीवों की अवगाहना के अल्प बहुत्व के चँवालीस बोल	२५२
४५ वां बोल:—		२५४
६६६	उत्तराध्ययन सूत्र के पचीसवें अ० की	

बोल नं०		पृष्ठ
	पैंतालीस गाथाएं	२५४
९९७	आगम पैंतालीस	२६०
	४६ वां बोलः—	**२६३**
९९८	गणितयोग्य काल परिमाण के ४६ भेद	२६३
९९९	ब्राह्मीलिपि के मातृकाक्षर छियालीस	२६४
	४७ वां बोलः—	**२६५**
१०००	आहार के सैंतालीस दोष	२६५
	४८ वां बोलः—	**२६५**
१००१	तिर्यञ्च के अड़तालीस भेद	२६५
१००२	ध्यान के अड़तालीस भेद	२६६
	४९ वां बोलः—	**२६७**
१००३	श्रावक के प्रत्याख्यान के उनचास भंग	२६७
	५० वां बोलः—	**२७१**
१००४	प्रायश्चित्त के पचास भेद	२७१
	५१ वां बोल	**२७१**
१००५	आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्ध के इकावन उद्देशे	२७१
	५२ वां बोलः—	**२७२**
१००६	विनय के बावन भेद	२७१
१००७	साधु के बावन अनाचीर्ण	२७२
	५३ वां बोलः—	**२७२**
१००८	मोहनीय कर्म के त्रेपन नाम	२७६
	५४ वां बोलः—	**२७७**
१००९	चौपन उत्तम पुरुष	२७७
	५५ वां बोलः—	**२७७**
१०१०	दर्शन विनय के पचपन भेद	२७६
	५६ वां बोलः—	**२७७**
१०११	छप्पन अन्तरद्वीप	२७७
	५७ वां बोलः—	**२८०**
१०१२	संवर के ५७ भेद	२८०

प्राप्तिस्थान
श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था
लायब्रेरी भवन बीकानेर (राजस्थान)